क्षितिज

अंक १
जनवरी,२०२४

साहित्य,
समाज
और व्यक्तित्व...

ISBN: 978---81-96-426-5
9 788196 426583

- मूल्य : 120/-

BY : SAHITYA SANGAM BOOKS

क्षितिज

साहित्य, सामाज और व्यक्तित्व

संपादक

अमित पाठक शाकद्वीपी

साहित्य संगम बुक्स

क्षितिज

साहित्य, समाज और व्यक्तित्व...

- प्रकाशन : साहित्य संगम बुक्स
- रूप सज्जा : अमित पाठक शाकद्वीपी
- अंक : प्रथम, जनवरी २०२४
- आईएसबीएन संख्या : 978-81-964265-8-3

- © सर्व अधिकार सुरक्षित

MADE IN INDIA

- मूल्य : 120/–

ISBN: 978---81-96-426-5

9 788196 426583

प्रतिलिप्याधिकार

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Sahitya Sangam Books.

- संपर्क करें :–
- **साहित्य संगम बुक्स**
- **संपादक : अमित पाठक शाकद्वीपी**
- **08935857296, 09304444946**
- **sahityasangambooks2@gmail.com**

साहित्य संगम बुक्स : क्षितिज

विषयानुक्रम...

संपादक

अमित पाठक शाकद्वीपी

संपादकीय
पृष्ठ संख्या : 2

जय श्री राम
पृष्ठ संख्या : 4

काव्य कानन : चिठ्ठियां, हद हो गई,
पृष्ठ संख्या : 5 – 6

वजूद , सूर्य उत्तरायण
पृष्ठ संख्या : 7 – 8

उभरती कलमकार
पृष्ठ संख्या : 9

मन चंचल
पृष्ठ संख्या : 10

कहानी लेखन : दुर्गेश जी के किस्से
पृष्ठ संख्या : 11–21

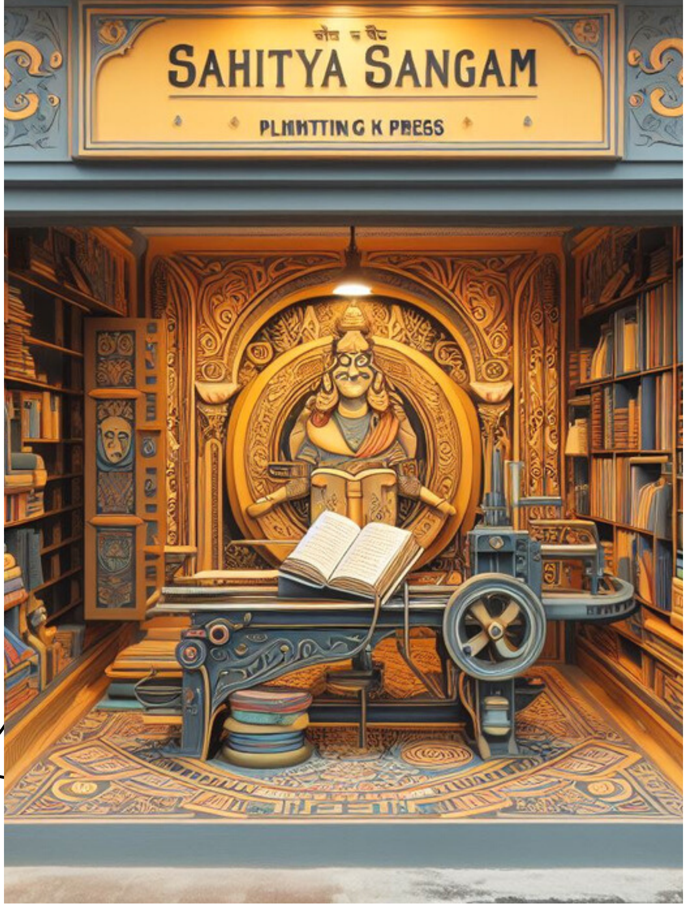

संपादकीय

"क्षितिज" शब्द का भावार्थ 'अकाश का किनारा' या 'समुद्र और आकाश का मिलन' से होता है। यह पत्रिका भी पाठकों और साहित्यकारों के मिलन के उद्देश्य से तैयार की गई है। प्रस्तुत पत्रिका में कवि और कवयित्रियों को समान अवसर उपलब्ध हैं। कवि और कवयित्री दोनों ही साहित्यिक रूप से अत्यंत महत्त्वपूर्ण होते हैं। कवि या कवयित्री की विशेषता उनकी समझ, संवेदनशीलता, भावनाओं को व्यक्त करने की क्षमता, शब्दों का रचनात्मक और रसात्मक उपयोग, ताकतवर भाषा, और साहित्यिक दृष्टिकोण में अद्वितीयता होती है। उनकी कला भाषा के माध्यम से समाज, जीवन, प्रेम, विचार आदि को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने में समर्थ होती है। साहित्य सिर्फ लिखित शब्दों का ही माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक समाज, संस्कृति, और मानवीय अनुभव का प्रतिबिम्ब भी है। इसमें विभिन्न भावनाएं, सोच, दृष्टिकोण, और समसामयिक समस्याओं का व्यापक छाया होता है। साहित्य एक समझौता नहीं होता, बल्कि यह समाज की विविधता और विचारधारा का एक प्रतिबिम्ब होता है। साहित्यिक मंच एक स्थान होते हैं जहां साहित्यिक कार्यक्रम, लेखकों के संवाद आदि आयोजित किए जाते हैं। यहां साहित्यिक रुचि रखने वाले लोग अपने विचार व्यक्त करते हैं और विभिन्न विषयों पर चर्चा करते हैं।

इन दिनों साहित्यिक मंचों की बाढ़ सी आ गई है। हर दूसरा साहित्यकार एक मंच लिए बैठा है। ऐसे में मंच की प्रामाणिकता पर भी सवाल खड़े होते हैं। हम जिनसे जुड़ते हैं हमें उनके विचारों से जोड़ कर ही लोग आंकते हैं इसलिए व्यक्ति हो या संस्था जुड़ते समय उनका सत्यापन और जांच कर लेना समझदारी का कार्य है। साहित्यिक मंचों की प्रामाणिकता का मूल आधार उनकी विश्वसनीयता, सत्यता और विचारों की गहराई में निहित होता है। एक प्रामाणिक साहित्यिक मंच वास्तविकता को समझाने, समीक्षा करने और नए विचारों को बढ़ावा देने का कार्य करता है, साथ ही नैतिकता, उदारता, और सहयोग की भावना को भी प्रोत्साहित करता है। इसके अलावा, वास्तविक संदर्भों को समझाने और विश्लेषण करने का भी यह माध्यम होता है। साहित्यिक मंचों का सरकारी निबंधन उन मंचों को संदर्भित करता है जो सरकार या सरकारी संस्थान द्वारा संचालित किए जाते हैं और साहित्यिक कार्यों, संगोष्ठियों, कवि सम्मेलनों, किताब मेलों आदि का आयोजन करते हैं। ये मंच साहित्य, कला, और सांस्कृतिक विकास को प्रोत्साहित करने का माध्यम होते हैं। इनमें साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देने, लेखकों और कलाकारों को प्रोत्साहित करने, और सामाजिक विचारधारा को बदलाव की दिशा में प्रेरित करने का काम होता है। आप जिन मंचो से संलग्न हैं उनका सरकारी निबंधन अनिवार्य है। मंच से जुड़ने से पूर्व उनका उद्यम पंजीकरण, जीएसटी पंजीकरण जान लेना बेहद जरूरी है।

कौन से प्रकाशक सही हैं ?

प्रकाशकों का सही ज्ञान प्राप्त करने के लिए कई माध्यम हो सकते हैं। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण तरीके हैं:

१.) प्रामाणिक स्रोतों का अध्ययन: प्रमाणित पुस्तकें, वेबसाइट्स, जर्नल्स, और विशेषज्ञों की लेखनी से जानकारी प्राप्त करें।

२.)विशेषज्ञों से संपर्क: विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों से बातचीत करें और उनके विचार सुनें।

३.)पीठीकरण: एक ही समस्या या विषय पर विभिन्न स्रोतों की समीक्षा करें ताकि सही ज्ञान प्राप्त हो सके।

४.)स्वतंत्र विचार: सभी दृष्टिकोणों को समझने के लिए स्वतंत्र रूप से सोचें और अपनी सोच को मजबूत करें।

यह सुनिश्चित करें कि आप सत्य की जांच करते हैं, स्रोतों की प्रामाणिकता को समझते हैं और साथ ही बिना पक्षपात के सभी दिशाओं को ध्यान में रखते हैं।

Amit Pathak's

साहित्य

संगम बुक्स

हिंदी साहित्य के प्रति समर्पित संस्था

साहित्य के सफ़र पर अग्रसर ...

साहित्य वह कला है जिसमें भाषा, विचार, और अनुभव को सुंदरता, रचनात्मकता, और विविधता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। यह शब्दों की शक्ति का उपयोग करके विभिन्न भावनाओं, विचारों, और अनुभवों को व्यक्त करने का एक तरीका है।

अच्छे साहित्यकार विविधता, संवेदनशीलता, समझदारी, और अद्वितीय दृष्टिकोण के साथ अपनी रचनाएं बनाते हैं। उनकी कला में विचारों का गहरापन, भाषा का सौंदर्य, और सामाजिक संदेश का स्पष्टीकरण होता है। वे अपने लेखन से पाठकों को आकर्षित करने और उन्हें सोचने पर मजबूर करने में सक्षम होते हैं।साहित्य के कई रूप होते हैं, जैसे कि कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास, लेख, विचार, आत्मकथा, व्यंग्य, गद्य, भाषण, और अन्य विभिन्न लेखन शैलियाँ। ये सभी अलग-अलग तरीकों से साहित्य को प्रस्तुत करते हैं।

आज एक साहित्यकार की सबसे बड़ी चुनौती है कि वह अपने साहित्य को जन सामान्य तक कैसे लें जाए?

अपने साहित्य को जन सामान्य तक पहुंचाने के कुछ तरीके हैं:

- लेखन वेबसाइट्स या ब्लॉग: अपनी रचनाओं को इंटरनेट पर ब्लॉग या लेखन प्लेटफ़ॉर्म पर पोस्ट करें।
- सोशल मीडिया: सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों पर अपने लेख, कविताएँ, कहानियाँ शेयर करें और अपने पाठकों से जुड़ें।
- साहित्यिक समाचार पत्रिकाएँ और माध्यम: साहित्यिक पत्रिकाओं में अपनी रचनाओं को प्रकाशित करने का प्रयास करें।
- साहित्य मेला और साहित्य सम्मेलन: साहित्य मेलों और सम्मेलनों में भाग लेकर अपनी रचनाओं को प्रस्तुत करें।
- स्वयं प्रसारण: अपनी रचनाओं को स्वयं प्रकाशित करें, जैसे कि स्वयं संचालित पुस्तक या ई-बुक के रूप में।
- आवाज का उपयोग: अपनी कविताएँ या कहानियाँ ऑडियो रूप में रिकॉर्ड करके प्रसारित करें, जैसे कि पॉडकास्ट के माध्यम से।
- साहित्य संगठनों से सहयोग: साहित्य संगठनों के साथ जुड़कर आप अपने लेखों या कविताओं को प्रस्तुत कर सकते हैं।
- ये तरीके आपको अपनी रचनाओं को जन सामान्य तक पहुंचाने में मदद कर सकते हैं।

यूं ही एक दिन
उठाया था कलम
मन के भाव लिखने को,
कोई अंदाजा नहीं था कि
स्याही और पन्नों से
ऐसी दोस्ती होगी।

– अमित पाठक शाकद्वीपी

जय श्री राम

श्री राम मंदिर निर्माण की संघर्ष यात्रा

1. बाबर ने 1528 में अपने सेनापति मीर बाकी को अयोध्या के भव्य राम मंदिर को तोड़ने का आदेश दिया। इतिहासकार कानिंघम के अनुसार, श्रीराम मंदिर को बचाने के लिए हिंदुओं ने जान की बाजी लगा दी थी। 1 लाख 74 हजार हिंदू वीरों के बलिदान के बाद ही मुगल मंदिर को हानि पहुंचा सके थे। मंदिर इतना मजबूत बना हुआ था कि तोड़ने के लिए तोप के गोलो का इस्तेमाल करना पड़ा।

2. मंदिर को नष्ट करने के बाद जलालशाह ने हिंदुओं के खून का गारा बनाकर लखौरी ईंटों से बाबरी मस्जिद का निर्माण कराया था।

3. भीठी नरेश महताब सिंह को जब मंदिर पर आक्रमण की जानकारी मिली तो उन्होंने बदरीनाथ तीर्थयात्रा रद्द कर दी और सैनिकों के साथ मीर बाकी से जा भिड़े। 17 दिनों तक चली भीषण जंग में दोनों ओर के असंख्य सैनिक मारे गए। अंत में महताब सिंह समेत रामभक्त वृद्ध केहरी भी वीरगति को प्राप्त हुए।

4. हंसवर रियासत के राजा रणविजय सिंह के कुल पुरोहित देवदीन पांडे ने 70 हजार योद्धाओं के साथ बाबर की सेना से श्रीराम जन्म भूमि के लिए संघर्ष किया। युद्ध में बूरी तरह से घायल हो जाने के बावजूद अनेक मुगल सैनिकों को मौत के घाट उतारा और अंत में वीरगति को प्राप्त हुए।

5. हंसवर रियासत के राजा रणविजय सिंह को अपने पुरोहित देवदीन पांडे के मृत्यु का समाचार मिला, तो उन्होंने अपनी महारानी जय कुंवरि को सत्ता सौंप दी और खुद 25 हजार सैनिकों को लेकर श्रीराम जन्म भूमि मुक्त कराने के लिए निकल पड़े और अंत में वीरगति को प्राप्त हुए।

6. राजा रणविजय सिंह के बलिदान के बाद महारानी जय कुंवरि ने आनंद संप्रदाय के महंत स्वामी महेश्वरनंद के साथ मिलकर श्रीराम जन्म भूमि का संघर्ष जारी रखा। स्वामी महेश्वरनंद के नेतृत्व में मठो, मंदिरों और अखाड़ों के असंख्य नागा संप्रदायी, गौरक्षपंथी, दिगंबर, निर्मोही, निर्मले और निर्वाणी साधुओं ने भी शस्त्र उठा लिए। इन्होंने शत्रुओं पर छापा मार युद्ध नीति अपनाई। मीर बाकी इतना डर गया कि ताशकंद भाग गया।

7.हुमायू के काल में भी महारानी जयकुंवरि और स्वामी महेश्वरानंद लगातार संघर्ष करते रहे। इन्हें 10वें युद्ध में सफलता मिली और श्रीराम जन्मभूमि दो-तीन सालों तक मुगलों से मुक्त रही। बाद में दोनों योद्धा मुगलों की विशाल सेना से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

8. अकबर के समय कोयंबतूर से आए रामानुज संप्रदाय के स्वामी बलराम आचार्य ने श्रीराम जन्मभूमि को मुक्त कराने के लिए 20 युद्ध लड़े। बाद में बीरबल और टोडरमल की सलाह पर अकबर ने वहां एक छोटा मंदिर बनाने की अनुमति दे दी। शाहजहां के काल तक उस मंदिर में निर्विघ्न पूजा होती रही।

1. 10 वर्ष निर्विघ्न पूजा होने के बाद औरंगजेब ने अपने सिपहसलार जांबाज खां को सेना समेत मंदिर नष्ट करने भेजा। अयोध्या के अहल्या घाट पर परशुराम मठ था। वहां बाबा वैष्णवदास रहते थे। उनके साथ चिमटाधारी साधुओं की एक विशाल शिष्य मंडली थी। इन्होंने चिमटों और त्रिशूलों के साथ मंदिर की रक्षा करी और जांबाज खां को उलटे पांव भागना पड़ा।

10. औरंगजेब ने दूसरी बार सैयद हसन अली को विशाल सेना के साथ मंदिर नष्ट करने भेजा। बाबा वैष्णवदास ने समय रहते गुरु गोविंद सिंह जी से संपर्क साधा। वे सेना समेत मंदिर की रक्षा के लिए अयोध्या पहुंच गए। उन्होंने साधु सेना के साथ मिलकर मुगल सेना को धूल चटा दी। हसन अली सआदतगंज के मोर्चे पर मारा गया।

11. 1664 में औरंगजेब ने फिर एक विशाल सेना मंदिर तोड़ने के लिए भेजी। लेकिन तब तक गुरु गोविंद सिंह भी लौट चुके थे। मुगल सेना ने चबूतरे पर बने लघु मंदिर को तोड़कर गड्ढा बना दिया। लेकिन श्रद्धालु वहीं आकर पूजा करते रहे।

12. अमेठी के राजा गुरुदत्त सिंह और पिपरा के राजकुमार सिंह ने नवाब सादत अली से श्रीराम मंदिर के लिए संघर्ष जारी रखा। हिंदुओं के लगातार हमलों से तंग आकर नवाब ने पूजा और नमाज दोनों की अनुमति दे दी।

13. आजादी से पहले एक अंग्रेज सिपाही अब्दुल बरकत ने फैजाबाद जिलाधीश केके नायर के सामने बयान दिया कि 22-23 दिसंबर 1941 की रात करीब दो बजे उसने मस्जिद के अंदर हल्की रोशनी देखी, जो बाद में सुनहरी हो गई। इसके बाद घुंघराले बालों वाले चार-पांच साल के एक सुंदर बालक को देखकर हैरान हो गया। थोड़ी देर बाद देखता है कि मुख्य द्वार का ताला टूटा हआ है, और हिंदुओं की भीड़ पूजा अर्चना कर रहे हैं।

14. राम मंदिर आंदोलन के दौरान मुलायम सिंह यादव ने कहा था कि विवादित ढांचे पर परिंदा भी पर नहीं मार सकता। 30 हजार से ज्यादा सुरक्षाकर्मी अयोध्या में तैनात कर दिए। लेकिन कोलकाता के कोठारी बंधुओं ने मुलायम सिंह के दावे की हवा निकाल दी। 23 साल के रामकुमार कोठारी और 20 साल के शरद कोठारी राम मंदिर के प्रति इतने समर्पित थे कि 200 किलोमीटर का रास्ता उन्होंने पैदल ही तय किया था।30 अक्टूबर 1990 को विवादित ढांचे पर सबसे पहले चढ़ने वाला युवक शरद कोठारी था। फिर बड़ा भाई रामकुमार कोठारी भी ढांचे पर चढ़ गया और भगवा ध्वज लहरा दिया।

15. 30 अक्टूबर 1990 को विवादित ढांचे से सीआरपीएफ के जवानों ने दोनों भाइयों की पीटकर खदेड़ दिया। लेकिन इसी बीच पुलिस कर्मियों ने कार सेवकों पर फायरिंग शुरू कर दी। फायरिंग से बचने के लिए दोनों भाई लाल कोठी वाली गली में छिप गए। दोनों भाईयों को पुलिसकर्मियों ने बाहर निकालकर बेरहमी से गोली मारकर हत्या कर दी। सरकारी आंकड़ों में शहीद कारसेवकों की संख्या सिर्फ 5 बताई गई है। लेकिन मृतकों की संख्या इससे कई अधिक थी।

16. श्रीराम मंदिर के पक्ष में सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने के बाद अयोध्या व आसपास के 105 गांवों के सूर्यवंशी क्षत्रिय परिवारों ने 500 साल बाद सिर पर पगड़ी और पैरों में चमड़े के जूते पहनकर अपने प्रण को पूरा किया। दरअसल, इनके पूर्वजों ने 16वीं सदी में मंदिर बचाने के लिए मुगलों से युद्ध लड़ा था। लेकिन वे युद्ध हार गए थे। बता दें कि ठाकुर गजसिंह के नेतृत्व में मुगलों जंग हुई थी। इस जंग में ठाकुर गजसिंह हार गए थे। हारने के बाद गजसिंह ने श्रीराम मंदिर जन्मभूमि पर कब्जा होने तक पगड़ी व जूते न पहनने की प्रतिज्ञा ली थी। इसी प्रतिज्ञा का पालन उनकी आने वाली पीढ़ियों ने भी किया।

17. श्रीराम मंदिर जन्म भूमि के लिए हिंदू समाज ने 78 धर्म युद्ध लड़े, जिनमें 3 लाख 50 हजार से ज्यादा हिंदू वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी।

18. बता दें कि बाबर के काल में 5 धर्मयुद्ध, हुमायूं काल में 10, अकबर काल में 20, औरंगजेब काल में 30, नवाब सादत अली के काल में 5, नासिरुद्दीन हैदर के समय 3, वाजिदअली के समय 2, अंग्रेजों के समय 2 और पूर्वप्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के कार्यकाल में एक युद्ध लड़ा गया था।

19. 5 अगस्त 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्रीराम जन्म भूमि पर राम मंदिर के लिए शिलान्यास किया था। इसके साथ भव्य श्रीराम मंदिर की नींव पड़ गई थी।

20. 500 साल तक हिंदू समाज के सतत संघर्ष के बाद आज अयोध्या में भव्य राम मंदिर बन रहा है। मंदिर की ऊंचाई 161 फीट रहेगी। सिर्फ नींव में ही 2 लाख ईंटे लगेगी जिन पर श्रीराम लिखा होगा। सीढ़ियों की चौड़ाई 16 फीट रहेगी। मंदिर में 5 गुंबद होगे। पूरा मंदिर 360 पिलर पर टिका होगा। इसमें गर्भ गृह, कुदु मंडप, नृत्य मंडप और रंग मंडप होंगे।

– साहित्य संगम बुक्स

चिट्ठियां

रघुनाथ पालीवाल

"खो गयी" वो......"चिट्ठियाँ"जिसमें
"लिखने के सलीके" छुपे होते थे
"कुशलता" की कामना से शुरू होते थे
बडों के "चरण स्पर्श" पर खत्म होते
थे...!!

"और बीच में लिखी होती थी "जिंदगी"

नन्हें के आने की "खबर"
"माँ" की तबियत का दर्द
और पैसे भेजने का "अनुनय"
"फसलों" के खराब होने की वजह...!!

कितना कुछ सिमट जाता था एक
"नीले से कागज में"...

जिसे नवयौवना भाग कर "सीने" से लगाती
और "अकेले" में आंखो से आंसू बहाती !

"माँ" की आस थी "पिता" का संबल थी
बच्चों का भविष्य थी और
गाँव का गौरव थी ये "चिठ्ठियां"

"डाकिया चिठ्ठी" लायेगा कोई बाँच कर सुनायेगा
देख देख चिठ्ठी को कई कई बार छू कर चिठ्ठी को
अनपढ भी "एहसासों" को पढ़ लेते थे...!!

अब तो "स्क्रीन" पर अंगूठा दौडता हैं
और अक्सर ही दिल तोडता है
"मोबाइल" का स्पेस भर जाए तो
सब कुछ दो मिनट में "डिलीट" होता है...

सब कुछ "सिमट" गया है 6 इंच में
जैसे "मकान" सिमट गए फ्लैटों में
जज्बात सिमट गए "मैसेजों" में
"चूल्हे" सिमट गए गैसों में

और इंसान सिमट गए पैसों में ....

काव्य:
हद हो गई ...

मन पीड़ा से भर गया,
बच्चा सड़क पर बैठा रो रहा,
मां कुचली गई उसकी गाड़ी से,
भीड़ बना रही उसका वीडियो,
संवेदनहीनता की हद हो गई,
लगता है मनुष्यता कहीं मर गई,
इंसानियत बच्चों के रूप में रो रही,
फेसबुक पर निर्लज्ज लोगों की रील बन रही !
कुछ अभागे यूट्यूबर भी अपना भाग्य आजमा रहे !

बच्चा बैठा अब भी रो रहा,
हाथ बढ़ाकर सबसे कुछ कह रहा,
अब मुझसे रहा नहीं गया,
मैं, उसे उठाकर घर ले गया,
सच पूछो तो,
इंसानियत की नजरों में शर्मिंदा होने से बच गया।

रचनाकार : लोकेश कौशिक
सहायक प्रोफेसर : SIASTE

वजूद : प्रमिला सैनी

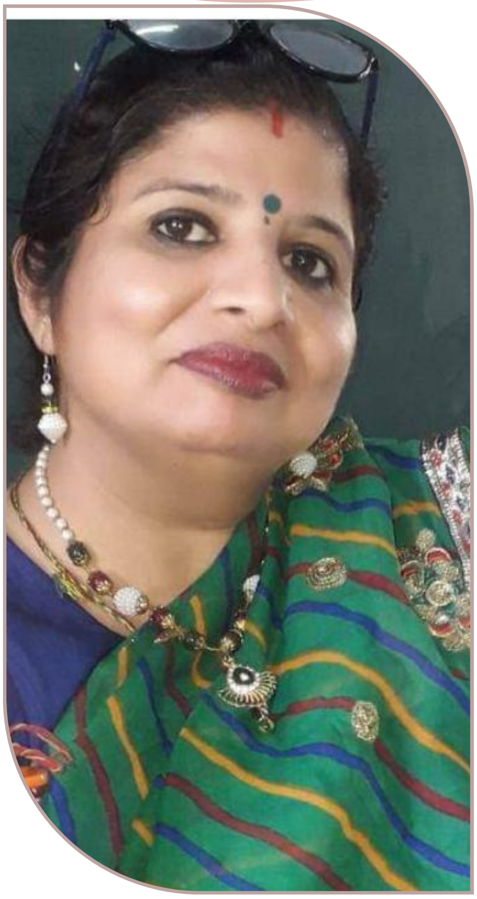

रिश्तों में फंसी अपना वजूद ढूंढती हूँ।
खाली फ्रेम में अपना ही अक्स ढूंढती हूँ।

क्या कुछ न किया इन रिश्तो के लिए ,
जीने से ज्यादा मरी मैं,
चलने से ज्यादा गिरी मैं।

संभालते – संभालते इन रिश्तो को,
खुद से ही दूर हुई मैं,
सुलझाते - सुलझाते इनकी गांठो को
खुद ही उलझती गई मैं।

रोते-रोते मुस्कुराने लगी मैं ,
हंसी इतनी ग़मो मे मैं की रो दी मैं।

इन्हें ढूंढते - ढूंढते खुद को ही
खो दूंगी मैं।
और ग़मो के सागर में डूब गई मैं।
अपने वजूद की कशमकश में
टूटी बिखरती गई मैं।

चली - रुकी,गिरी - संभाली
पर सबके लिए जीती रही मैं।

रिश्तो में फंसी,खाली फ्रेम है अभी तक,
अपनो की इस भीड़ में ,अपनो को ढूंढ रही मैं।

शायरी

बिछड़कर तुझसे सूखकर दाख हो गई हूं,
चंदन थी मैं पहले अब तो राख हो गई हूं।
कब आ रहे हो मिलने बस इतना बता दो,
इंतजार में तेरे पतझड़ की शाख हो गई हूं।।

– गीतकार – पवन शर्मा

सूर्य उत्तरायण

छट गई है देखो कालिमा
सूर्य आ गये है उत्तरायण की ओर
हो गई है सारी तमस अब दूर
प्रकृति रंग चुका है लालिमा लिए भोर
भर लो जल अब अंजुली में
अर्पण करो सूर्य नारायण की ओर
नभ में खिलखिला रहा है
पतंग लेकर नई जोश और उमंग
भर लें हम सभी चलों एक नई उड़ान
ना हो अपनी डोर किसी दूजे
की हाथों से लिपटी उसकी ओर
गुड़ तिल की मिठास लाए आप सभी के
जीवन में अनेकों मिठास
भूल न जाना कहीं कोई
खड़ा तो नहीं,सहायता के लिए
इसलिए थोड़ा दान पुण्य के लिए
कदम बढ़ाए द्वार की ओर
सुंदर मन हो भक्ती की ओर
मधूर वाणी से बांध दो सभी में
प्रेम की डोर
खिलखिला रही है देखो प्रकृति
सूर्य जो आ गए अब उत्तरायण की ओर

प्रिया प्रसाद

उभरती कलमकार : प्रतिभा पाण्डेय 'प्रति'

- नाम:- प्रतिभा पाण्डेय "प्रति"
- पति का नाम:-श्री सुजीत पाण्डेय ।
- पिता का नाम:- श्री जगदीश पाण्डेय ।
- माता का नाम:- श्रीमती सुमित्रा पाण्डेय।
- शिक्षा:- स्नातकोत्तर (हिन्दी) एवं नेट जे. आर. एफ. उत्तीर्ण ।
- पेशा:- कुशल गृहिणी एवं कवयित्री ।
- मूल निवास:- वाराणसी, उत्तर प्रदेश ।
- वर्तमान निवास:- चेन्नई, तमिलनाडु।
- रचनाएं:- 300 से भी अधिक रचनाएं ।
- पहचान:- श्रृंगार रस कवयित्री ।

प्रतिभा पाण्डेय 'प्रति'

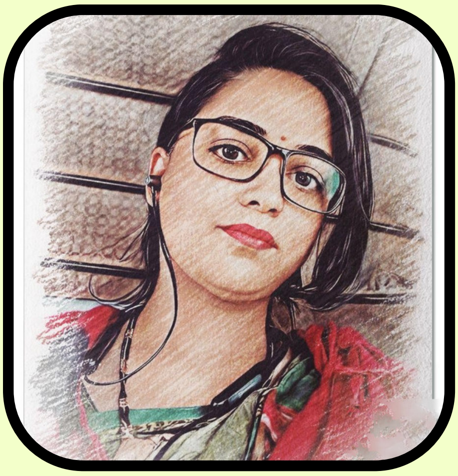

साहित्यिक उपलब्धियाँ :- दस से ज्यादा साझा संकलन में अपनी रचनाओं से अपनी प्रतिभा बिखेर चुकी हैं, और आगे भी अग्रसर हैं ।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्र-धर्म की अलख जगाती पुस्तक "इनसे हैं हम-2" की सहलेखिका होने का गौरव इनको प्राप्त है। इनकी रचनाएं सामाचार पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं।

काव्य सृजन हेतु इन्हे अमृता प्रीतम पोयट्री अवार्ड,अखिल भारतीय चन्द्रालोक साहित्य सम्मान और भी कई सम्मान से अनेको बार सम्मानित किया जा चुका है ।

मन चंचल

मन चंचल, न तन चंचल
जीवन का हर पल चंचल
रंग चंचल न की राग चंचल
उड़ने की हर चाह चंचल ।

रातों में जुगनुओं की चमक चंचल
दरिया का लहराता जल चंचल
खेतों में लहराते फसल चंचल
पेड़ो पे कोयल की कू चंचल ।

जीवन चंचल की मृत्यु चंचल
या उड़ने वाले पंख चंचल
आने वाला पल चंचल की
जाने वाले पल चंचल ।

मैं चंचल की तुम चंचल
कि हम दोनों का मन चंचल
गगन चंचल की धरा चंचल
जीवन का हर पल चंचल ।

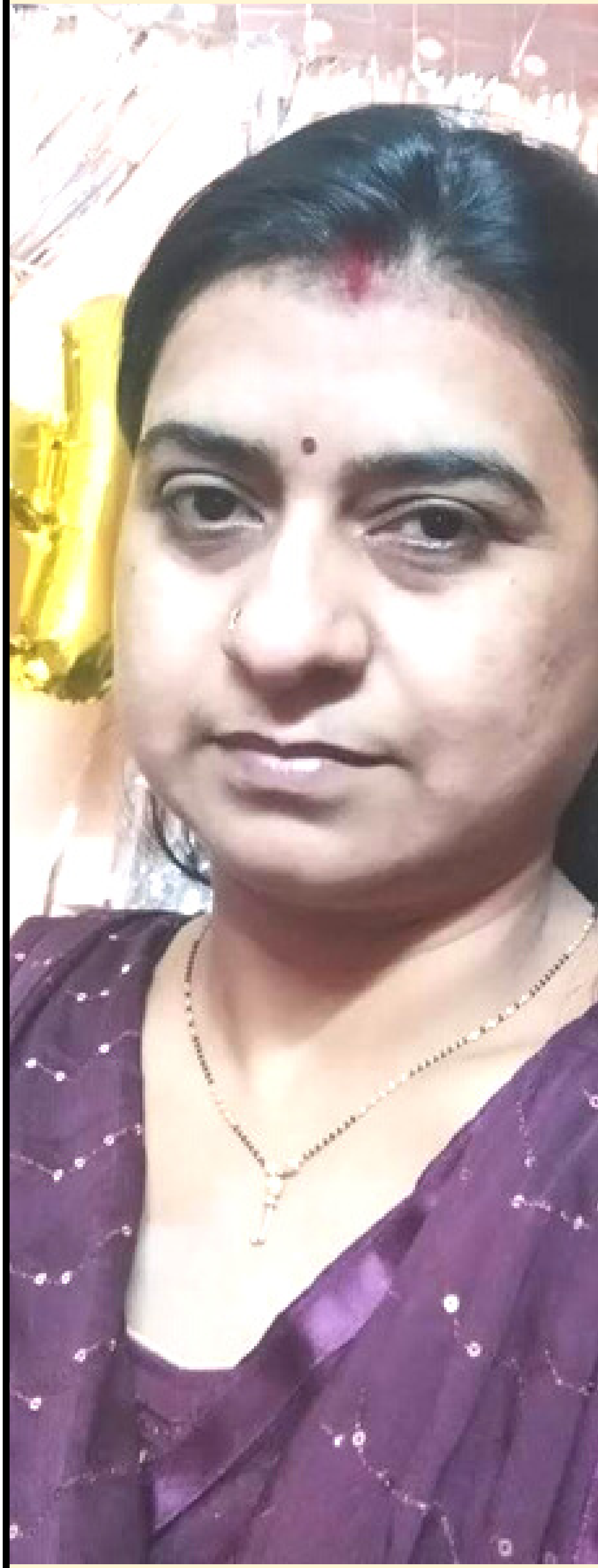

रेणु ओझा जी

लेखक परिचय

• अमित पाठक शाकद्वीपी

- सामान्य परिचय
- नाम : अमित पाठक शाकद्वीपी
- पिता का नाम : स्व. श्री अरविंद पाठक
- माता का नाम : श्रीमती अनुपमा पाठक
- लिंग : पुरुष
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक प्रतिष्ठा
- पदनाम या व्यवसाय : प्रकाशक
- अभिरुचि : लेखन
- निवास स्थान : बोकारो, झारखंड

आप किस प्रकार की रचना करते हैं / किया है

काव्य रचना केवल : ☐ गद्य रचना केवल : ☐ दोनों : ☑

स्व घोषणा

आगमी प्रेषित कृति मेरे स्वयं द्वारा रचित एक मौलिक और अप्रकाशित रचना है जिसे अपनी इच्छा से मैंने साहित्य संगम बुक्स को इस संकलन हेतु दिया है। उपरोक्त विवरण पूर्णतः सत्य है और इन्हें इस परिचय पृष्ठ पर साझा किया जा सकता है।

★ ★ ★ ★ ★

किस्सा १ : मेले में दुर्गेश जी

– अमित पाठक शाकद्वीपी

एक छोटे से गांव में एक आदमी रहते थे, जिनका नाम दुर्गेश था। वह गरीब थे, लेकिन उनमें एक अद्वितीय साहस और संघर्ष की भावना थी। उनकी आदत थी कि वे हमेशा सकारात्मक भावनाओं के साथ आगे बढ़ते और कभी हार नही मानते थे।

एक दिन, गांव में एक बड़ा मेला आया। यह मेला गांव का सबसे बड़ा आयोजन था और गांववाले इसका बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। दुर्गेश भी मेले की तैयारी में जुट गए और अपने छोटे से दुकान से सामान लाने लगे।

मेले का पहला दिन आया और गांववाले मेले में उमड़ आए। दुर्गेश भी अपने सामान के साथ मेले का हिस्सा बने। उनकी दुकान पर विभिन्न वस्त्र, गहनों, और गिफ्ट्स का विशेष प्रदर्शन था।

जब मेले के पहले दिन का समय बीत गया, तो दुर्गेश के पास बहुत कम बिक्री हुई। वे हार नहीं माने और अपने साथी व्यापारीयों के साथ सोचने बैठे कि कैसे वे बिक्री बढ़ा सकते हैं।

उन्होंने एक योजना बनाई और दूसरे दिन मेले में वापस आए। इस बार, वे अपने वस्त्रों को एक खास तरीके से प्रदर्शन करने लगे और ग्राहकों को अपनी दुकान पर आकर्षित करने के लिए विशेष प्रस्तावना की।

इस बार कुछ ग्राहक आकर्षित होकर दुर्गेश की दुकान पर आए और उनके सामान को खरीदने लगे। उन्होंने देखा कि कैसे दुर्गेश अपने माल को अद्वितीय तरीके से पेश कर रहे हैं और उन्हें उसके प्रति आकर्षित किया गया।

मेले के तीसरे दिन, दुर्गेश की दुकान भर गई और वह बड़ी सफलता प्राप्त करने लगे। उन्होंने अपने उत्पादों की महंगाई कम करके ग्राहकों को आकर्षित किया और उन्हें उनके माल को खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया।

मेले के आखिरी दिन, दुर्गेश ने अपने साथी व्यापारीयों के साथ मिलकर मेले का आकलन किया और उन्होंने देखा कि उनकी दुकान की सफलता ने उन्हें अच्छी तरह से अवसरों का सही से फायदा उठाने का मौका दिलाया।

दुर्गेश जी की यह कहानी हमें यह सिखाती है कि आपके पास आपके संघर्षों को पार करने की भावना होनी चाहिए और कभी हार नहीं माननी चाहिए। वह न तो धनवान थे और न ही बड़े शहर के व्यापारी, लेकिन उन्होंने अपने संघर्ष को जीत कर दिखाया और सफलता हासिल की।

लेखक परिचय

• लोकेश कौशिक

• सामान्य परिचय

- नाम : श्री लोकेश कौशिक
- पिता का नाम : श्री वीरेन्द्र कौशिक
- माता का नाम : श्रीमती कुसुमलता कौशिक
- लिंग : पुरुष
- शैक्षणिक योग्यता :स्नातकोत्तर (हिंदी व शिक्षा शास्त्र) एवम् बी . एड.
- पदनाम : सहायक प्रोफेसर
- अभिरुचि : कविता और कहानी लेखन
- निवास स्थान : हरियाणा

आप किस प्रकार की रचना करते हैं / किया है

काव्य रचना केवल : ☐ गद्य रचना केवल : ☐ दोनों : ☑

स्व घोषणा

आगमी प्रेषित कृति मेरे स्वयं द्वारा रचित एक मौलिक और अप्रकाशित रचना है जिसे अपनी इच्छा से मैंने साहित्य संगम बुक्स को इस संकलन हेतु दिया है। उपरोक्त विवरण पूर्णतः सत्य है और इन्हें इस परिचय पृष्ठ पर साझा किया जा सकता है।

★ ★ ★ ★ ★

किस्सा २ : दुर्गेश जी चले ससुराल

– लोकेश कौशिक

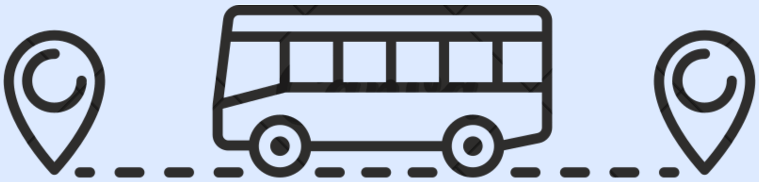

दुर्गेश जी उस दिन परिवार के साथ रामगढ़ जाने वाली बस के इंतजार में सड़क पर खड़े थे। रामगढ़ में उनका साला वैरिस्टर है, वकालत अच्छी चल रही है; उसी ने बुलाया है कि जीजा जी यहाँ आ जाओ। मैं आपकी व्यवस्था करवा दूंगा।

पत्नी निर्मला ने बहुत समझाया था कि आंख बंद करके कहीं भी हस्ताक्षर मत किया करो। कागज पर क्या लिखा रहता है, यह भी जान लेना चाहिए। बड़े भाई नरेश जी ने पिता ने जो बड़ी सी दुकान दोनों भाईयों को कारोबार के लिए बनवा कर दी थी, उस कारोबार में पैसा भी पिता का ही लगा था।

पिता की मृत्यु के बाद छोटे भाई दुर्गेश जी को पता ही नहीं लग पाया कि कब बड़े भाई ने सारा कारोबार अपने नाम करवा लिया। हाँ, उन्होंने कुछ कागजात पर छोटे भाई दुर्गेश जी के हस्ताक्षर तो जरूर करवाये थे, पर वह बडे भाई नरेश जी को पिता समान समझकर कभी यह संदेह ही नहीं कर पाया कि उसे कारोबार से निकालने की बड़े भाई की कोई योजना चल रही है।

हाँ, भाभी रामदुलारी पर तो उसे कभी-कभी शक होता था कि यह लम्बे समय तक परिवार को जोड़कर नहीं रख पायेंगी, परन्तु अपने बड़े भाई नरेश जी के बारे में उसे ऐसा अनुमान कभी नहीं लग पाया था। सब कुछ इतनी जल्दी-जल्दी हो गया कि दुर्गेश जी अभी भी सदमें में ही हैं।

दुर्गेशजी के दो लड़के हैं, बड़े लड़के ने अभी बारहवीं की परीक्षा दी है और छोटा बेटा नौवीं कक्षा में आया है। अब दुर्गेश जी के पास जमा पूंजी के नाम पर कुछ नहीं बचा, क्योंकि बड़े भाई साहब ही सारा हिसाब-किताब रखते थे। इसलिए पत्नी निर्मला के भाई मोहन बाबू ने उन्हें रामगढ़ बुलाया है ताकि वे उनका कोई नया कारोबार शुरू करवा सकें।

इसलिए, पति-पत्नी और दोनों बच्चें सड़क पर खडे होकर रामगढ़ जाने वाली बस का इंतजार कर रहे हैं।

किस्सा ३ : अनकही पीड़ा

– लोकेश कौशिक

दुर्गेश मेरे साथ ही कॉलेज में गणित का प्रोफेसर था, मेरा तबादला उन दिनों पटना हो गया था। मैं दुर्गेश के ही घर में किराये पर रहता था। दोनों साथ-साथ कॉलेज जाते थे। दुर्गेश की दो बेटियाँ थी, बड़ी बेटी रिया कॉलेज में ही बी.एस.ई. की छात्रा थी। छोटी बेटी तन्नु इस वर्ष बारहवीं की परीक्षा देगी।

दुर्गेश की पत्नी नंदिनी पेट से थी, परिवार को उम्मीद थी कि इस बार बेटा होगा। अक्सर मुझसे कहता था- यार, वैसे तो मेरे लिए बेटा-बेटी समान हैं, लेकिन अब की बार बेटा हो जाए तो अच्छा होगा। मैं चाहता हूँ कि मेरे बाद जमीन-जायदाद सम्भालने वाला कोई हो, बेटियाँ तो पराया धन हैं इन्हें तो इनके ससुराल भेजना ही पड़ेगा। एक वंश चलाने वाला तो होना ही चाहिए, मेरे बाद बेटियों को घर खुला मिलना चाहिए। यह तभी सम्भव होगा, जब इस बार बेटा हो । मैं, उसकी पीड़ा समझ सकता था।

मैं, हर 15-20 दिनों बाद अपने घर छपरा जाता था, ताकि परिवार को सम्भाल संकू । जिस दिन घर से आता था, उस दिन सीधे कॉलेज पहुंचता था। जैसे ही कॉलेज पहुंचा तो सभी के चेहरे उतरे हुए थे, पता लगा कि दुर्गेश को कल शाम ही सिटी हॉस्पिटल में तीसरी कन्यारत्न की प्राप्ति हुई है। एक बार तो मैं भी कुछ सहम सा गया। इसलिए नहीं कि बेटी हुई है, बल्कि यह सोचकर कि दुर्गेश इस बार काफी निश्चिंत सा दिख रहा था। कहता था कि इस बार सारे लक्षण पुत्र के हैं, माँने भी दवा दिलवाई है। सभी ने बहुत प्रार्थनाएँ की हैं, इस बार तो बेटा ही होगा।

कॉलेज समाप्त होने पर मैं कमरे पर ना जाकर सीधा सिटी हॉस्पिटल पहुंचा। देखता क्या हूँ कि वहाँ कमरे के बाहर गमगीन सा माहौल है। दुर्गेश की माँ शोक मुद्रा में बैठी भगवान को कोस रही थी। मुझे देखते ही कहने लगी-बेटा! दुर्गेश के तो भाग्य में ही दुख लिखा है। मैं उनके पास बैठा ही था कि दुर्गेश आ गया। शायद पत्नी नंदिनी की कोई दवा लेने बाहर गया था। चेहरा उतरा हुआ था, मुझे देखते ही रोनी सूरत में उसने पूछा कि घर से कब आये? तुम्हें कैसे पता चला? मैंने बताया सीधे घर से कॉलेज ही पहुंचा था, तब पता चला कि कल शाम ही तुम्हारी पत्नी ने बेटी को जन्म दिया है। मुझ से रहा नहीं गया, कॉलेज समाप्त होते ही दौड़ा चला आया। तब मैंने दुर्गेश से कहा- यार! सब भगवान के हाथ में है, बेटी को ही बेटा मान लो। तब कहने लगा-हाँ, यार मोहन!, अब तो लोग ऐसे ही आश्वासन देंगे। मुझ से मिलकर दुर्गेश पत्नी की दवा देने अन्दर चला गया! मैं उसकी माता जी के पास बाहर ही बैठ गया। तभी उनके कुछ करीबी रिश्तेदार नवजात को देखने वहाँ पहुँचे। दुर्गेश जी की माता जी को देखते ही कहने लगे- हाय! बहुत बुरा हुआ। तीसरी भी बेटी ही हो गई। भगवान बड़ा कठोर है, किसी-किसी को तो बेटे ही बेटे दे देता है, यहाँ हमारा दुर्गेश एक बेटा पाने को भी तरस गया।

तभी दुर्गेश की माँ ने रिश्तेदारों से कहा कि अन्दर जाकर क्या करोगे? बहू बड़ी मुश्किल से चुप हुई है, कहीं ऐसा ना हो कि आप लोगों को देखकर फिर से रोने लगे। अब जो उसके भाग्य में लिखा था, सो उसे मिल गया। ऐसा लगता था-मानों दुर्गेश की माँ उस नवजात पर तंज कस रही हो कि ये सारी लक्ष्मियाँ मेरे दुर्गेश के ही भाग्य में आनी लिखी थी। मैं, बैठा सोचता रहा कि इसमें उस नवजात का क्या दोष है? उसे तो अभी मालूम ही नहीं कि वह लड़का है या लड़की। अभी एक दिन भी उसे इस संसार में आये पूरा नहीं बीता है और वह बेचारी अबोध नवजात समाज की रुसवाईयों का सामना कर रही है। उसकी अनकही पीड़ा कौन समझेगा ?

– लोकेश कौशिक

लेखिका परिचय

• आभा गुप्ता

• सामान्य परिचय

- नाम : श्रीमती आभा गुप्ता
- पिता का नाम : श्री रमाशंकर गुप्ता
- माता का नाम : श्रीमती सुशीला गुप्ता
- लिंग : स्त्री
- शैक्षणिक योग्यता :स्नातकोत्तर (समाजशास्त्र)
- पदनाम : कुशल गृहिणी एवं कवयित्री
- अभिरुचि : कविता और कहानी लेखन
- निवास स्थान : इन्दौर, मध्य प्रदेश

आप किस प्रकार की रचना करते हैं / किया है

काव्य रचना केवल : ☐ गद्य रचना केवल : ☐ दोनों : ☑

स्व घोषणा

आगमी प्रेषित कृति मेरे स्वयं द्वारा रचित एक मौलिक और अप्रकाशित रचना है जिसे अपनी इच्छा से मैंने साहित्य संगम बुक्स को इस संकलन हेतु दिया है। उपरोक्त विवरण पूर्णतः सत्य है और इन्हें इस परिचय पृष्ठ पर साझा किया जा सकता है।

★ ★ ★ ★ ★

किस्सा ४ : साथ साथ रहेंगे

– आभा गुप्ता

चारो तरफ अफरा तफरी मची हुई थी। कहीं कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि किसको किधर जाना है, बस सब भाग रहे थे अपनी-अपनी समझ के अनुसार..और जब बहुत दूर जाने के बाद भी उन्हें वो रास्ता नही मिलता जहॉ उन्हें जाना है तो वो फिर से लौट रहे थे किसी दूसरी दिशा मे जाने के लिए। दुर्गेश जी भी उन्ही मे से एक थे।

कहॉ जाना है? किसी ने पीछे से उन्हें रोकते हुए पूछा।
दुर्गेश जी ने पीछे मुड़कर देखा एक व्यक्ति जो चेहरे से कुछ जाना पहचाना लग रहा था, ने उनसे फिर पूछा- कहाँ जाना है?
धोबिया टंकी– उन्होंने हांफते हुए कहा।
आप ढेकहा तरफ आ गए है, आपको चौराहे से दायीं तरफ जाना चाहिए। – उसने मुस्कुराते हुए कहा।
इससे पहले कि दुर्गेश जी कुछ और कहते वो लगभग लड़खड़ाते हुए गिर पड़े।
उस व्यक्ति ने देखा दुर्गेश जी बेहोश हो गए थे और उनका पूरा शरीर पसीने से भीगा हुआ था।
उस व्यक्ति के ऑखों मे वर्षों पुरानी यादें जैसे चलचित्र की तरह दौड़ पड़ी थी उसमे उसने देखा कि दुर्गेश जी अपने बीमार बीबी को कैसे तड़पते हुए मरता देखते रहे थे और उनकी शादीशुदा तीनों बेटियॉ अपने पतियों के साथ अपनी असमर्थता जताते हुए उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया था। दुर्गेश जी रीवा के जाने माने साहूकारों मे से एक थे, उन्होने अपनी तरह से लोगों की बहुत सहायता की है उनकी नेकी की लोग उदाहरण तक देते है अभी भी, उन्होने धन-जायदाद बनाया लेकिन सब अपने ही लोगों के द्वारा चालाकी से छीन लिया गया था। अपने ही शहर मे दर-दर भटकने के ड़र से एक दिन वो पता नहीं कहॉ चले गए, और आज इस अवस्था मे मिले।
जब वो होश मे आए उन्होने खुद को एक नर्म मुलायम गद्दे से बिछे पलंग पर पाया और अचंभित से इधर-उधर देखने लगे, तभी वो व्यक्ति हॉथ मे एक बड़ी सी तस्तरी जिसमे खाने-पीने की की कई सामाग्री थी, लेकर आया और मुस्कराते हुए बोला-भूल गए दुर्गेश अपने मित्र स्नेही को, मैने तो तुम्हे वहीं पहचान लिया था जब तुम दशहरे की भगदड़ से बचते हुए इस तरफ आ गए और तुम्हारा पीछा करते हुए मै भी। हम दोनों ही गलत राह पे थे मगर समय सही था हम फिर मिल गए, मै तुमसे कुछ नहीं पूछूंगा कि तुम कहॉ थे? क्या किए ? कैसे रहे? तुम्हारा जी चाहे तो अपना समझकर बता देना, और हां आज से हम हमेशा साथ-साथ रहेंगे।
दुर्गेश जी को कोई उत्तर न सूझा, बस एकटक दोस्त स्नेही को निहारते रहे।

लेखक परिचय

• कमल पटेल

• सामान्य परिचय

- **नाम : श्री कमल पटेल जी**
- **पिता का नाम : श्री हरिराम जी पटेल**
- **माता का नाम : श्रीमती जतन बाई**
- **लिंग : पुरुष**
- **शैक्षणिक योग्यता : स्नातक (अर्थशास्त्र)**
- **पदनाम : कृषक एवं कवि**
- **अभिरुचि : कविता और कहानी लेखन**
- **निवास स्थान : ग्राम – चकरावदा, उज्जैन, मध्य प्रदेश।**

आप किस प्रकार की रचना करते हैं / किया है

काव्य रचना केवल : ☐ **गद्य रचना केवल :** ☐ **दोनों :** ☑

स्व घोषणा

आगामी प्रेषित कृति मेरे स्वयं द्वारा रचित एक मौलिक और अप्रकाशित रचना है जिसे अपनी इच्छा से मैंने साहित्य संगम बुक्स को इस संकलन हेतु दिया है। उपरोक्त विवरण पूर्णतः सत्य है और इन्हें इस परिचय पृष्ठ पर साझा किया जा सकता है।

★ ★ ★ ★ ★

किस्सा ५ : स्वाध्याय से लाभ (भाग १)

– कमल पटेल

मध्य प्रदेश के एक गांव में दुर्गेश जी नाम के एक सज्जन निवास करते थे।उनकी उम्र लगभग पचास वर्ष हो चुकी थी। वैसे उनका व्यवसाय खेती किसानी का था। लेकिन वे एक अच्छे साहित्यकार भी थे। उन्होंने पचास वर्ष की आयु तक खेती-बाड़ी में बहुत अच्छा लाभ कमाया। इसके सांथ ही उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में भी कई पुरस्कार प्राप्त कर लिए। यदि दुर्गेश जी के प्रारंभिक जीवन पर प्रकाश डाला जाए तो दुर्गेश जी का जन्म एक मध्यम वर्गीय कृषक परिवार में हुआ। दुर्गेश जी के अलावा उनकी एक बहन और एक बडे भाई थे। भैया का नाम रमेश एवं बहन का नाम सुशीला था। दुर्गेश जी की माता का नाम रमाबाई और पिता का नाम राधेश्याम जी था। दुर्गेश जी की प्रारंभिक शिक्षा उनके पैतृक गांव बरखेड़ा में हुई। जो उज्जैन जिले के अंतर्गत आता है। बालक दुर्गेश चंचल और जिज्ञासु स्वभाव से युक्त पढाई लिखाई में बहुत ही होशियार था। दुर्गेश के दोनों भाई बहन कबीर पढ़ाई में बहुत अच्छा मन लगता था। दोनों दुर्गेश से आगे की कक्षा में पढ़ते थे। गांव में केवल माध्यमिक स्तर तक विद्यालय था। आगे की पढ़ाई के लिए शहर में जाना पड़ता था। इसलिए दुर्गेश जी की बहन केवल आठवीं तक ही पढ़ पाई।उसके बाद बहन की शादी कर दी गई। उसके यहां एक बेटा और एक बेटी ने जन्म लिया। वह अपने ससुराल में परिवार के सांथ सबके साथ खुश थी। इधर बालक दुर्गेश और बड़े भाई दोनों ने शहर के विद्यालय में आगे की पढ़ाई जारी रखी। दोनों भाई माता-पिता के सांथ खेती-बाड़ी का काम भी करते और पढ़ाई करने के लिए हर दिन यात्री बस में सफर कर के शहर के विद्यालय में पढ़ने जाते। बड़े भाई ने स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल कर ली। लेकिन दुर्गेश जी बारहवीं की पढ़ाई कला संकाय में अर्थशास्त्र से प्रथम श्रेणी से पूर्ण करने के बाद महाविद्यालय में प्रवेश तो ले लिया लेकिन परिस्थिति वश एक साल बाद उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी। यानी स्नातक की पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाए।लेकिन दुर्गेश जी को प्रारंभ से ही कथा, कहानी, किस्से सुनने और प्रश्नोत्तरी, सामान्य ज्ञान, एवं विविध प्रकार की पुस्तके, धार्मिक ग्रंथ एवं उपन्यास पढ़ना बहुत ही पसंद था। दुर्गेश जी अपनी क्षेत्रीय बोली और मातृभाषा दोनों से बहुत अधिक लगाव रखते थे। उन्हें अन्य भाषा में चंचल स्वभाव होने के कारण अंग्रेजी का अभ्यास तो हुआ लेकिन फर्राटेदार इंग्लिश नहीं सीख पाए। उन्होंने मन ही मन विचार किया। क्योंकि हमारे देश में अंग्रेजी एक अतिथि भाषा है। और मैं इसे ठीक से सीख भी नहीं पाऊंगा। इसलिए क्यों नहीं मैं अपनी बोली और मातृभाषा दोनों को समर्पित भाव से अंगीकार करूं। इस विचार को आत्मसात करने के बाद दुर्गेश जी कृषि कार्य के सांथ आराम करने के समय मन लगाकर अलग-अलग लेखक के लेख, पद्य रचनाएं, दैनिक समाचार पत्र, उपन्यास और कई तरह की ज्ञानवर्धक पुस्तके पढ़ने लगे।

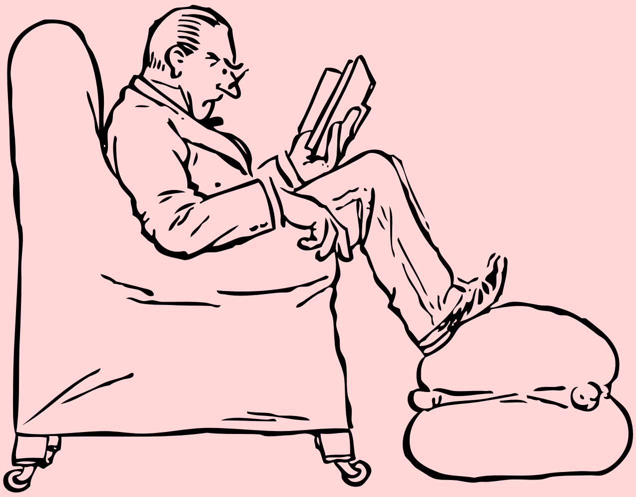

पढ़ते-पढ़ते वह कई बार प्रश्नोत्तरी में भी सहभागिता करते। कई बार लेखक द्वारा टिप्पणी की सहभागिता करने के आग्रह को भी स्वीकार कर बहुत अच्छी टिप्पणी करने लगे। धीरे-धीरे समाचार पत्र और मासिक पत्रिकाओं में अपने द्वारा लिखे गए लेख भेजने लगे। जो शुरू शुरू में तो लेखन अच्छा नहीं होने के कारण अस्वीकार कर देते।लेकिन धीरे-धीरे उनके लिखे हर लेख को समाचार और पत्र और मासिक पत्रिका में स्थान मिलने लगा।

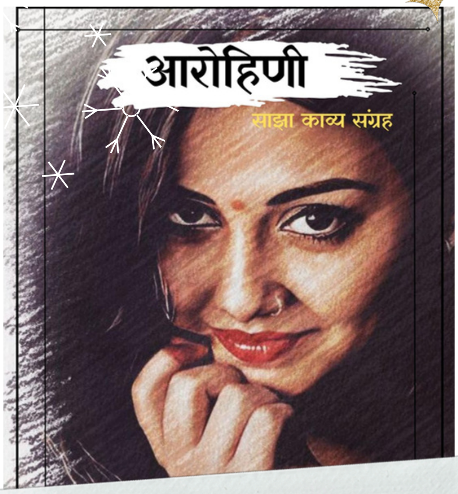
आरोहिणी
साझा काव्य संग्रह

प्रीत का डोर

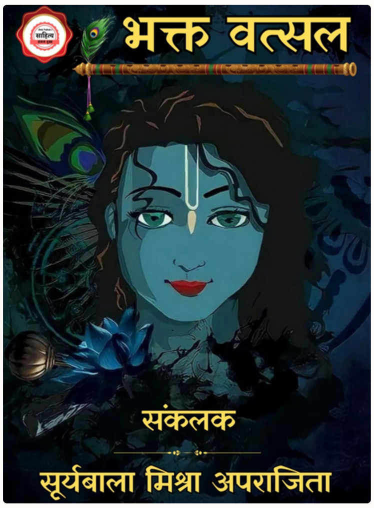
भक्त वत्सल
संकलक
सूर्यबाला मिश्रा अपराजिता

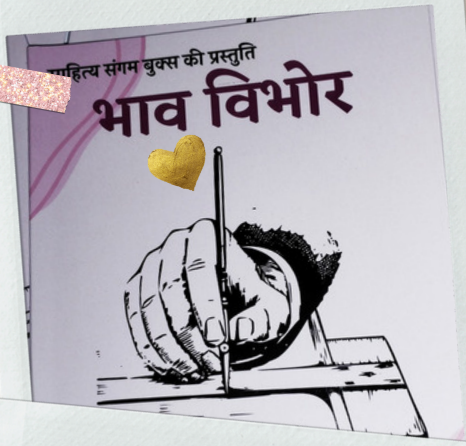
साहित्य संगम बुक्स की प्रस्तुति
भाव विभोर

काव्यांश

मातृत्व
अमित पाठक शाकद्वीपी

सीमंतिनी
अमित पाठक शाकद्वीपी

उनसे इश्क़ करके
(साझा प्रेम काव्य संकलन)
संकलक :

मन्तव्य
संकलक
अमित पाठक शाकद्वीपी
एवं प्रबल पाण्डेय

शब्दों का गुल्लक
साझा काव्य संकलन
परिवार
स्नेह
अनुभव
विचार
समर्पण
सहयोग
प्रकृति
दया
जीवन
अभिरुचि
संकलक
प्रतिभा पाण्डेय एवं अमित पाठक

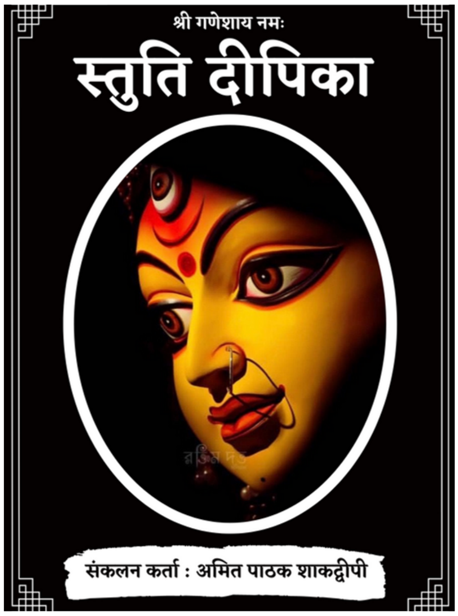
श्री गणेशाय नमः
स्तुति दीपिका
संकलन कर्ता : अमित पाठक शाकद्वीपी

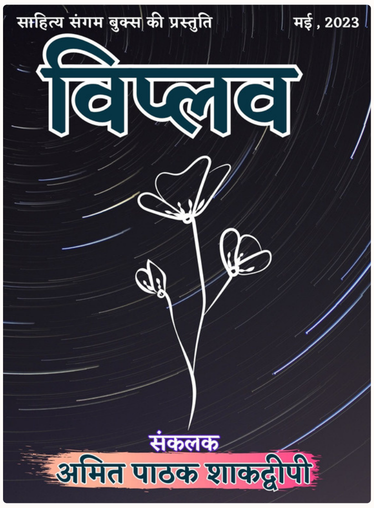
साहित्य संगम बुक्स की प्रस्तुति
मई , 2023
विप्लव
संकलक
अमित पाठक शाकद्वीपी

साहित्य संगम बुक्स की

आगामी संकलन

फरवरी माह में प्रकाश्य

प्रीत की डोर -2

FOR MORE WHATSAPP US 8935857296

Amit Pathak's
साहित्य
संगम बुक्स

ISBN: 978---81-96-426-5
9 788196 426583

• मूल्य : ₹120/– मात्र